डॉ॰ शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस॰ आर॰ ए॰ पी॰ कॉलेज,
बारा चकिया ।

B. A. Part - II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper — III

Date:- 19-02-2022

नई कहानी

नई कहानी की विकास यात्रा बीसवीं शताब्दी के छठे दशक में प्रारंभ हुई । सन् 1955 में 'कहानी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ जिसमें प्रकाशित होने वाली कहानियाँ परम्परागत कहानियों से कुछ अलग दिखाई पड़ रही थीं - कथ्य और टेक्नीक दोनों ही दृष्टियों से । बाद में इन कहानियों को 1955-56 के आसपास 'नई कविता' के वजन पर 'नई कहानी' कहा जाने लगा । नई कहानी में जीवन के यथार्थ को ईमानदारी के साथ चित्रित किया गया है तथा वह कल्पना प्रसूत होने पर भी अपने आस-पास के जीवन की कहानी दिखती है । उसमें विषय वैविध्य भी है । इसे विभिन्न वर्गों में बाँटा जाता है :-

1. ग्रामीण अंचल की कहानियाँ
2. नगर बोध की कहानियाँ
3. यथार्थबोध की कहानियाँ
4. यौन समस्याओं की कहानियाँ
5. व्यंग्य प्रधान कहानियाँ

छठे दशक के आरम्भ में हिन्दी कहानी में ग्रामीण अंचल की कहानियों ने पाठकों को विशेष आकृष्ट किया ।

Scanned by CamScanner

इन कहानीकारों में शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणु के नाम प्रमुख हैं। इनकी कहानियों में गाँव की तस्वीर साफ-सुथरे रूप में उभरी है, किन्तु उनमें रोमांस की प्रधानता है। शिवप्रसाद सिंह के कहानी संकलनों के नाम हैं— आरपार की माला, मुर्दा सराय, इन्हें भी इंतजार है आदि। मार्कण्डेय के कहानी संकलनों में महुए का पेड़, भूदान, हंसा जाई अकेला माही, आदि प्रमुख हैं। फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियों में आंचलिकता उभर कर आई है। 'लाल पान की बेगम', 'तीसरी कसम' उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

नई कहानी में नगरबोध की प्रवृत्ति प्रमुखता से व्यक्त हुई है। आज के नगरीयजीवन में पाई जाने वाली सतही सहानुभूति, आन्तरिक ईर्ष्या, स्वार्थ परता, जीवन की कृत्रिमता आदि की अभिव्यक्ति कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, अमरकांत की कहानियों में देखी जा सकती है।

उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, इजनी पनिकर जैसी कहानी लेखिकाओं ने पति-पत्नी एवं नारी-पुरुषों संबंधों को अपनी कहानियों में प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है। मैं हार गई, त्रिशंकु, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है आदि मन्नू भण्डारी के प्रमुख कहानी संकलन हैं।

कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', राजेन्द्र यादव की 'टूटना', 'मोहन राकेश की 'अपरिचित'

Scanned by CamScanner

कहानियों में प्रेम और विवाह के कटु-मधुर चित्रण है। मोहन राकेश की 'अपरिचित', 'मिस्पाल' कमलेश्वर की 'तलाश', उषा प्रियंवदा की 'वापसी का एकदिन', अमरकांत की 'जिन्दगी और जोंक' कहानियाँ टूटी हुई नारी या टूटे हुए पुरुष की कहानियाँ हैं।

'नई कहानी' हिन्दी कथा विकास यात्रा की एक उपलब्धि है। यद्यपि इस कहानी पर मूल्यहीनता का आरोप लगाया जाता है क्योंकि 'जीवन के शाश्वत मूल्य' जैसी किसी चीज में इनका कोई विश्वास नहीं है तथापि हम इसे इस आरोप से बरी कर सकते हैं। नई कहानी में मूल्यहीनता न होकर मूल्यों का परिवर्तन है। नई कहानी किसी एक क्षण या एक स्थिति या एक संवेदना को व्यक्त करने वाली कहानी है। मानव की दृष्टि बदलने के साथ ही नई कहानी का शिल्प भी बदला है।

Scanned by CamScanner